Indian Streams Research Journal
Volume1, Issue. 10, Nov 2011
ISSN:-2230-7850

Available on all social networks
citeulike

ORIGINAL ARTICLE

'धार्मिकता एवम् संस्कृतीकरण के संदर्भ में नवधार्मिक संगठनों की भूमिका'

भालचंद्र देविदास पाटील

समाजशास्त्र विभाग,गि.द.म.कला के.रा.न वाणिज्य एवं म.धा
विज्ञान महाविद्यालय जामनेर
;महाराष्ट्र

सारांश :

प्राचीन काल में विशिश्ट या श्रेश्ठ जनों तक सीमित धार्मिक अधिकार तथा धर्म परंपराओं के पालन की उत्कटता नव धार्मिक संगठनोंव्दारा जनसामान्य तक बडे ही प्रभावशाली ढंग से प्रसारित की जा रही है।ये नवधार्मिक संगठन संस्कृतिकरण के प्रसारस्त्रोत के रुपमें महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है।

वर्तमान में इन संगठनों के कारण हिंदू समाज के विभिन्न जाति–श्रेणियों में संस्कृतीकरण की मात्रा में वृद्धि हुई है। प्रस्तुत शोधनिबंध में ऐतिहासिक कालसे धार्मिकता का प्रसारण किस तरह हुआ है तथा सांप्रत काल में नवधार्मिक संगठनों की भूमिका किस तरह इस संदर्भ में महत्वपूर्ण है इसकी चर्चा की गई है।

तथ्य संकलन हेतु महाराष्ट्र के जामनेर तहसिल क्षेत्र के नवधार्मिक संगठनों के अनुयायियों का समूह चयन किया गया था तथा सर्वेक्षण, निरिक्षण एवं साक्षात्कार के माध्यम से तथ्थ्यों का संकलन किया गया है।

पारिभाषिक संज्ञाः– नवधार्मिक संगठन, धार्मिकता, संस्कृतीकरण, संप्रदाय इ.

धार्मिकता और भारतीय समाज का गहरा संबंध है। भारतीय समाज में धर्म एवम् धार्मिकता को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है। यहां पर धर्म व्यक्तिगत एवम् सामाजिक जीवन का। एक अविभाज्य अंग बन गया हैं। भारतीय समाज में प्रचलित अनेकानेक प्रथाएं, परम्पराएकृ, वर्तन प्रणालियां, वर्तन के मानदण्ड, आदि मूलतः धर्मोद्भवित हैं या धर्मप्रेरित हैं। प्राचीन काल से लेकर धर्म का यह प्रभाव हमें देखने को मिलता है। प्राचीन काल में धर्म का यह प्रभाव अत्यधिक था, वर्तमान में इसकी मात्र में कमी जरुर आई है परंतु वह पूर्णतया नश्ट नहीं हुआ है। प्राचीन काल में राजधर्म के रुप में राज्यसंस्था तथा शासनप्रणाली भी धर्मव्दारा नियंत्रित थी। जनसाधारण के जीवन में धर्म का एक अटल स्थान था। भोजनसे लेकर कामवासनाओं की पूर्ति तक की सारी भौतिक आवश्यकताओंकी आपूर्ति भी धर्म से प्रभावित थी। इन सभी कियाकलापों में जो व्यक्ति धर्म का पालन करता था वह 'धार्मिक' और पालन न करनेवाला 'अधार्मिक माना जाता था। धार्मिकता यह समाज में एक उच्च श्रेणी का गुण माना जाता था। धर्म पालन करनेवाले व्यक्ति को सुसंस्कृत समझा जाता था। इसी आधार पर समाज में उच्च प्रतिश्ठाप्राप्त तथा श्रेश्ठ लोंगोंका वर्ग निर्माण हुआ। उनके वर्तन का अनुकरण करते हुए उस श्रेश्ठ पंक्तिमें स्थान प्राप्त करने का प्रयास समाज के और घटक भी करने लगे। इस प्रकार धार्मिक प्रतिश्ठाप्राप्त लोंगो का आचरण औरों के लिए एक आदर्श के रुप में सामने आया। सम्भवतः इसी कारण ऐसे लोगों में अहंगंड की भावना निर्माण हुई और यह भावना ही हिन्दू समाज में धर्म मार्तण्डों तथा सनातनी और कर्मठ लोगों के एक अलग वर्ग के निर्माण का कारण बनी। हिन्दू समाज की असंख्य जातियों में श्रेश्ठ–कनिश्ठता की भावना इस प्रवृत्ति से ही निर्माण हुई।

उपरोक्त धार्मिकता का प्रभाव हिदुओं के ब्राम्हण, क्षत्रिय तथा वैश्य ऐसे उच्च वर्णो में ही प्रमुखता से पाया जाता था। शूद्रोपर लगाए गए अनेकानेक निर्बन्धों के कारण वे इस पूरी प्रक्रिया से बाहर थें। धार्मिकता यह अपना अधिकार नही है, हम कनिश्ठ हैं, अस्पृश्य हैं ऐसी न्यूनता की भावना शूद्रों में थी। इस प्रकार धार्मिकता के कारण ही उच्च वर्णियो में श्रेश्ठता की भावना और निम्नवर्णियों में कनिश्ठता की भावना निर्माण हुई थी। यह चित्र साधारणतया उत्तर वैदिक, स्मृती तथा मध्ययुगीन काल का है। तथापि 13/14 वी शताब्दीसे भारत के विभिन्न प्रांतों में जो भक्ति आंदोलन हुआ जैसे–उत्तर में संत कबीर, तुलसीदास, बंगाल में श्री चैतन्य महाप्रभू, दक्षिण में तिरुवल्लूवर, त्यागराज, वेमना, गुजराथ में नरसी मेहता, महाराश्टभ में संत नामदेव, ज्ञानेश्वर, तुकाराम, एकनाथ, आदि सन्तों ने जो भक्ति आंदोलन किया उससे हिन्दू समाज के कनिश्ठ वर्ण के लोग भी भक्तिमार्ग की तरफ आकृश्ट हुए। इस प्रकार भक्तिमार्ग से हो कर धर्मनियमों का पालन करने की प्रवृत्ति उनमें भी बढनें लगी। इस तरह हिन्दु समाज में धार्मिक प्रभाव के तीन प्रमुख स्तर निम्नरुपसे बताए जा सकते हैं।

अ. सनातन वैदिक धर्म का प्रभाव और उससे निर्मित धार्मिक कट्टरता।
ब. धार्मिक कट्टरता से निर्मित जातीय विशमता।
क. भक्ति आंदोलन से विभिन्न भक्ति संप्रदायों का उदय तथा धार्मिकतापर उनका प्रभाव।

ब्रिटीशों के आगमन के पश्चात् पश्चिमी विचारधारा का प्रभाव भारतीय समाजपर होने लगा। भौतिकता, व्यक्तिस्वतंत्रता, जैसी संकल्पनाओं तथा व्यवसाय, सामाजिकता एवम् राजनीती में हुए परिवर्तनों के कारण यहाकृ के समाज जीवन के साथ–साथ व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन में भी बडा परिवर्तन हुआ। धार्मिकता तथा भक्ति ये आदर्श व्यक्तित्व तथा सभ्यता के आवश्यक गुण होते हैं, इस मान्यता को ठेस पहकुची। आधुनिक रहन–सहन, नई प्रथाएकृं, रीतियाकृ, नए व्यसनों का प्रचलन बढने लगा। दूर संचार तथा यातायात के क्षेत्रों में हुई कांति के कारण पश्चिमी सभ्यता के अनुसरण की गति तीव्रता से बढी। संक्षेप में पश्चिमीकरण की तुलना में संस्कृतीकरण की गति मंद हुई। विशेशता यह रही कि भारतीय समाज के सभी वर्गों में पश्चिमी सभ्यता का अनुकरण होने लगा।

Please cite this Article as :भालचंद्र देविदास पाटील **,** 'धार्मिकता एवम् संस्कृतीकरण के संदर्भ में नवधार्मिक संगठनों की भूमिका'**: Indian Streams Research Journal (Nov ; 2011)**

Religion & Society among the Coorges of south India इस पुस्तक में प्रो. एम्.एन्. श्रीनिवासने संस्कृतीकरण की अवधारणा स्पश्ट करते हुए लिखा है, संस्कृतीकरण वह प्रकिया है जिसके व्दारा कोई नीच हिंदू जाति या कोई जनजाति अथवा अन्य समूह किसी उच्च और प्रायः द्विज जाति की दिशा में अपने रीति–रिवाज कर्मकाण्ड, विचारधारा और जीवन पध्दती को बदलता है।

नवधार्मिक संगठनोंव्दारा धार्मिक विचार तथा कर्मकाण्ड आदि का प्रसार बडी मात्रा में किया जा रहा है। वस्तुतः आरम्भ से ही मंदिर, मठ, तीर्थ स्थान एवम् धार्मिक संगठन संस्कृतीकरण के स्त्रोत रहे हैं। ऐसे स्थानोंपर एकत्रित जनसमूह में सांस्कृतिक विचारों एवं विश्वास के प्रसार एवम् प्रचार हेतु उचित अवसर उपलब्ध कराया जाता है। सम्प्रति भारतीय समाज में ऐसे कई नवधार्मिक संगठन निर्माण हुए हैं जो कई स्थानोंपर अपने केन्द्र स्थापित करते हैं और ऐसे केन्द्रों के माध्यमसे सत्संग, हरिकथा, भजन तथा कर्मकाण्डों का आयोजन नियमित रुपसे करते है। ऐसे कार्यक्रमों में सम्मिलित होने हेतु नियमित रुपसे अनुयायी एवम् भक्तगण आते रहते हैं। उनके व्दारा इन रिवाजों का अनुकरण किया जाता है। ऐसा प्रायः देखा गया है कि जब कोई प्रमुख जाति किसी धार्मिक सम्प्रदाय अथवा धार्मिक परम्पराओं को अपनाने लगती है तो उसे देखकर अन्य जातियॉ भी उन धार्मिक संगठनों, संप्रदायों एवम् परम्पराओं को अपनाने लगती हैं। और इससे संस्कृतीकरण की मात्रा में वृध्दी होती है।

1970–80 के दशक से भारत में पुनः नए रुप से कुछ धाराएकृ हिंदू भक्ति संप्रदायों में निर्माण होने लगी। इन धाराओं का अस्तित्व इस के पूर्व में भी था परन्तू 70–80 से इनके कार्य का प्रसार अधिक होने लगा। इन संप्रदायों में चिन्मय मिशन, सिध्दयोंग ध्यान आश्रम, सहज योग ध्यान, प्रजापिता ब्रहध्मकुमारी ईश्वरीय विश्वविदयालय, गायत्री परिवार, स्वामी समर्थ स्वाध्याय मंडल, संत आसाराम बापू प्रणित योग वेदान्त सेवा समिति, स्वाध्याय परिवार, आदि अनेक संप्रदायों का कार्य लक्षणीय है तथा इन संप्रदायों के कारण पुनः एक बार नए रुप से हिंदू समाज में भक्ति तथा धार्मिकता बढट्ने लगी है। सांप्रत काल में इनके अनुयायी भी बढने लगे हैं। इनके परिणाम राजकीय, सामाजिक, आर्थिक, आदि. विविध क्षेत्रों में दिखाई देते हैं। संस्कृतीकरण की प्रक्रियाको फिरसे गती प्राप्त होने लगी है। जामनेर तहसील क्षेत्र में ब्रांह्मणों की संख्या कम है। जातीय संरचना में उनका स्थान यहां पर भी सर्वोच्च है। मराठा, गुजर, माळी, राजपूत आदि. प्रभुत्वशाली जाती के सदस्यों की संख्या अधिक मात्रा में है। बंजारा, भिल, जैसी जनजातियॉ भी इस क्षेत्र में अपना अस्तित्व बनाए हुए हैं। जामनेर तहसील के क्षेत्र में श्री संप्रदाय, स्वामी समर्थ सेवा केंद्र, प्रजापिता ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्वविदयालय, आर्ट ऑफ लिव्हिंग, सहजयोग ध्यान केंद्र, आसाराम बापू प्रणीत योग वेदांत सेवा समिति, आदि. नवधार्मिक संगठन कार्यरत हैं । उनके अनुयायियों में उपरोक्त सभी जाती, जनजातियों के लोग सम्मिलित होते हैं। इन नवधार्मिक संगठनोंदध्वारा होमहवन, स्तोत्रपाठ, मंत्रस्मरण, ध्यान, योग आदि. धार्मिक आध्यात्मिक क्रिलाकलापोंका प्रसार एवम् प्रचार प्रभावशाली ढंग से अनेकों कार्यक्रमों कें माध्यमसे किया जाता है। उपरोक्त सभी जाती–जनजातियों में इनका प्रसार नवधार्मिक संगठनोंद्वारा सीधे रुप में या फिर उपरोक्त जाती–जनजातियों में परस्परों के अनुकरण के द्वारा किया जाता है। हालांकि ब्राह्मणों में पहलेसेही इन यौगिक, धार्मिक या आध्यात्मिक बातों का प्रचलन थां परंतू इन संगठनो के कारण बहुसंख्यक समाज में भी इन बातों पर ध्यान केंद्रित किया जाने लगा है।

प्रो. श्री निवास के अनुसार, "यद्यपि एक लम्बी कालावधिसे ब्राह्मणी कर्मकाण्ड एवम् प्रथाएं नीची जातियों मे फैली हैं लेकिन बीच–बीच में स्थानीय रुप से प्रमुख जातियों की जीवन–पद्धति का भी शेश लोगों के दवारा अनुकरण किया गया। प्रायः स्थानीय रुपसे प्रभावी जातियां ब्राह्मण नहीं होती थीं। या कहा जा सकता है कि निम्न स्तर वाली अनेक जातियों में ब्राह्मणी प्रथाएं एक शृंखलाबद्ध प्रतिक्रिया (Chain Reaction) कें रुप में पहुंचती हैं। इसका आशय यह है कि प्रत्येक समूह ने अपने से एक स्तर उंचे समूह से कुछ ग्रहण किया है एवम् अपने से नीचे वाले समूह को कुछ दिया है।"

जामनेर क्षेत्र के सभी नवधार्मिक संगठन इस शृंखला–बद्ध प्रतिक्रिया में शृंखला की आरम्भिक कडी के रुप में प्रस्तुत होते हुए दिखाई देते हैं। संस्कृतीकरण के प्रसार का प्रमुख स्त्रोत बनते हैं। फिर भी जहां तक संस्कृतीकरण का प्रश्न है, निम्न निरिक्षणों या उदाहरणोंद्वारा इस बात की पुश्टि होती है कि संस्कृतीकरण की प्रक्रिया बढट्ने लगी है। नीचे दिए उदाहरण महाराष्ट्र के जामनेर तहसील के ग्रामीण क्षेत्र से जुडे हुए हैं जहां पर बंहुसख्यक समाज या मध्यम सामाजिक तथां जातीय स्तर के लोग रहते है।

कुछ संप्रदायों से संबंधित भक्तों के घर बेटा पैदा होने पर जन्म के समय ही उसकी जिव्हा पर शहदसे ',' लिखते हैं। हालांकि यह संस्कार उनमें पहले से ही प्रचलित नहीं था परन्तु उनके गुरु के प्रवचनमें सुनने के बाद उन्होंने ऐसा किया ।
विवाह के समय पत्रिका, कुण्डली, गुण मीलन, आदि पहले नही ं देखते थे परंतु अब वे इन्हें अत्यधिक आवश्यक मानते हैं तथां अगर पत्रिका मेलन होता है तो ही बात आगे बढायी जाती है।

कुछ युवाओं ने यह भी बताया कि वे भोजन के समय कुछ श्लोक या भजन गाते हैं या फिर मंत्रस्मरण करते हैं । पहले उन्हें ऐसी आदत नहीं थी पर संप्रदाय के निर्देशोके अनुसार उन्हें यह आदत पडी और वे इसे अपने व्यक्तित्व में एक सुधार मानते हैं।

सत्संग, हरि कथा, संकीर्तन सप्ताह, आदि कार्यक्रमों में सहभागी होनेवालों की संख्या बढी है तथा ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन हरेक गांव में समय–समय पर अधिक मात्रा में होने लगा है। कुछ युवा छात्रों ने तो अपनी पढाई छोडकर इन संप्रदायों के कार्य में ही अपने आपको लगा लिया है तथा संप्रदाय का प्रसार ही उनका जीवन–लक्ष्य बन चुका है।

ग्रामीण क्षेत्र की कई महिलाएं जों कि बहुसंख्यक समाज से संबंधित हैं, नियमितरुपसे गायत्री मंत्र, अथर्वशीर्श, भगवद्गीता, विश्णुसहस्त्रनाम, शिवमहिम्नःस्तोत्र, दत्तात्रेय स्तोत्र, आदि, स्तोत्रों का पाठ करने लगी हैं। कुछ महिलाएं सामूहिक रुप से इस तरह के पाठ का आयोजन करती हैं।

कई बार यह भी देखा गया है कि ऐसे संप्रदायों के अनुयायियोंमे पश्चिमी/ऐलोपैथिक उपचारों की अपेक्षा आयुर्वेदिक उपचार पद्धती अपनाने का प्रमाण भी अधिक होता है। ऐसे अनुयायी भारतीय प्राचीन वास्तुशास्त्र में भी विश्वास रखते हैं। उनके अनुसार यह सब करने से उनमें धार्मिकता बढती है तथा सन्तुश्टि प्राप्त होती है। कई संत/गुरु अपने प्रवचनोंमे आयुर्वेदिक उपचार एवम् वास्तुशास्त्र के नियम बताते है इसका भी यह परिणाम हो सकता है। इससे पश्चिमीकरण की अपेक्षा संस्कृतीकरण के प्रति आकर्शण बढता है।

निष्कर्षः–

इस प्रकार समकालीन भारतीय हिंदू समाज में इन नवधार्मिक संगठनों के कारण एक नई धार्मिक चेतना निर्माण हुई है।

इलैक्ट्रॉनिक्स प्रसारमाध्यमों में हुई क्रांति के कारण नवधार्मिक संगठनोंका प्रभाव भारतीय समाज में अधिक बढता जा रहा है। 'आस्था','संस्कार','जागरण', आदि. टी.वी. चैनल्स 'धम' इस विशय से ही जुडे हुए हैं। इन नवधार्मिक संगठनों के कार्यक्रमों का अखण्ड प्रसारण यह चैनल्स करते हैं। नवधार्मिक संगठनों का प्रसार एवं प्रचार तथा उनके अनुयायियों में श्रद्धा के प्रति दृढता का निर्माण करने का कार्य इनके माध्यमसे होता है। श्रद्धा और आस्थां का नवीनतम आविश्कार नवधार्मिक संगठनों के रुप में दिखाई पडता है। धार्मिकता तथा संस्कृतीकरण की मात्रा में निश्चित रुप से इन संगठनों के कारण वृद्धि हो रही है। भले ही महानगरों में इसका प्रभाव अधिकता से नहीं दिखाई दे रहा होगा परन्तु छोटे शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों में निश्चित रुप से यह अधिक मात्रा में दिखाई देता है।

संदर्भ ग्रंथः—
1 बिवलकर र.वा.य महाराष्ट्र के प्रमुख साधना संप्रदायय नाशिकः कौस्तुभ प्रकाशन
2 लवानिया एम्.एम्.,2001, भारत का समाजशास्त्र, जयपुर : रिसर्च पब्लिकेशन्स
3 सरदार गं. बा., 1976, संत वाङ्मयाची सामाजिक फलश्रुती, पुणे : कॉन्टिनेंटल प्रकाशन
4 कुलकर्णी पी.के.,1997, संस्थांचे समाजशास्त्र, नागपुरः विद्या प्रकाशन
5 ज्ञमजांत ैण्टण ए भ्पेजवतल व बिंजम पद प्दकपंस
6 ैतपदपूं डण्छणए 1952ए त्मसपहपवद — ैवबपमजल ंउवदह जीम ब्वववतहमे व िैवनजी प्दकपंए व्गवितक
7 क्मेंप ।ण्त्ण्ए 1993ए डवकमतद ळवकउमद पद प्दकपंए ठवउइंलरू च्वचनसंतण